

आषाढ़ का एक दिन नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिए ।

आषाढ़ का एक दिन' नाटक में एक ऐतिहासिक सी प्रतीत होने वाली कथा को आधार बनाया गया है। इसमें इतिहास नहीं है, इतिहास का केवल एक आवरण है। तथ्यात्मक स्तर पर देखें तो हम पाते हैं कि जो तथ्य नाटक में प्रयुक्त हुए हैं, वे ऐतिहासिक रूप से कम और मिथकीय रूप से ज्यादा प्रामाणिक हैं। कालिदास के संबंध में कुछ तथ्य भारत के सामाजिक जीवन में भली-भांति प्रचलित हैं, जैसे - उनका काली का भक्त होना, वेश्यागामी होना, प्रारंभ में तिरस्कृत रहना, फिर राजकुमारी से विवाह करना व अंततः हिमालय का वासी होना। राजतरंगिणी में कालिदास के मातृगुप्त के रूप में कश्मीर का शासक बनने की बात है। यही धारणा प्रसाद के स्कंदगुप्त में भी है। इसी आलोक में राकेश ने उसे तथ्य के रूप में स्वीकार किया है।

नाटक के बाकी सभी चरित्र, सारी घटनाएँ और सारी स्थितियाँ काल्पनिक हैं। प्रियंगु, मल्लिका, अंबिका, विलोम, मातुल, रंगिणी-संगिणी, अनुस्वार, अनुनासिक आदि सभी चरित्र काल्पनिक ही हैं। अतः स्पष्ट है कि नाटक इतिहास के बहुत थोड़े से प्रसंगों को लेकर उनके साथ कल्पना का अत्यधिक प्रयोग करते हुए कथानक की सृष्टि करता है।

कुछ आलोचकों ने प्रश्न उठाया है कि इतिहास के साथ यह छेड़छाड़ क्या साहित्यकार की नैतिकता हो सकती है? इस संबंध में दो-तीन बातें ध्यान रखनी आवश्यक हैं। राकेश ने कल्पना का प्रयोग चाहे अधिक किया हो, प्रायः किसी ऐतिहासिक तथ्य को गलत रूप में प्रस्तुत नहीं किया है। दूसरे, यह नाटक न तो घटना प्रधान नाटक है, न चरित्र प्रधान। यह एक स्थिति प्रधान नाटक है। इतिहास के तथ्य घटनाओं और चरित्रों तक सीमित होते हैं, मनोवैज्ञानिक स्थितियों तक उनकी पहुँच नहीं होती। उदाहरणतया बार-बार आषाढ़ के मेघों का बरसना, मल्लिका और अंबिका; कालिदास और विलोम के तनावपूर्ण संबंधों का जटिल होते जाना नाटक के प्रमुख तत्त्व हैं और इतिहास ऐसे तत्त्वों की व्याख्या नहीं कर सकता। वस्तुतः राकेश की इतिहास दृष्टि बर्नार्ड शॉ जैसी है जिनके लिये इतिहास का संबंध तथ्यों से नहीं, अंतःप्रज्ञा से है।

अंतिम बिंदु यह है कि इतिहास के वातावरण को सृजित करके इस नाटक को क्या सफलता मिली? वस्तुतः नाटक का उद्देश्य वातावरण को ऐतिहासिक बनाना नहीं अपितु आज के रचनाकार की पीड़ा, वेदना और संत्रास को शाश्वतता प्रदान करना है। यह नाटक इतिहास के कुछ तथ्यों का इस प्रकार सर्जनात्मक प्रयोग करता है कि वे तथ्य अपने ऐतिहासिक संदर्भ से मुक्त होकर मानव के शाश्वत और सामान्य अनुभव के अंग बन जाते हैं।

निबन्ध

कानून का निर्माण बुद्धि द्वारा नहीं बल्कि सत्ता द्वारा होता है ।

१. विषय से सम्बन्धित तीन-पाँच वाक्यों को लिखिए
२. इस रचना औपचारिक /व्यक्तिगत में दिए गए विषय पर प्रकाश डाला जाएगा
- यह लेखन कार्य पाँच अनुच्छेदों में लिखित रूप से प्रकट किया जाएगा

मुख्य बातें:

वाक्य एक और दो के द्वारा आपका परिचय अच्छी तरह से विस्तार पूर्वक बन्ध जाएगा ।

मध्य भाग

१. हर एक अनुच्छेद में विषय से सम्बन्धित जुड़ी आदर्श वाक्यों को लिखिए।
- विषय से जुड़ि अधिक से अधिक जानकारी आप के पास होनी चाहिए ।
- आप दिए गए विषय पर शोध-कार्य भी कर सकते हैं ,परन्तु आप का निबन्ध आप ही के शब्दों में लिखा होना चाहिए ।

निष्कर्ष

विषय से जुड़ी होनी चाहिए ना कि किसी नए वाक्यों या विचारों को समाग्री के तौर पर लिखा जा सकता है ,एसा लिखने से दिए गए निबन्ध का विषय अर्थ हीन हो जाएगा ।

योजना भी तैयार कीजिए । (२५० शब्दों का लेख लिखिए।)

भाषा दीप

रहीम के दोहे

१. रहीमन प्रती न कीजिए, जस खीरा ने कीन ।

उपर से तो दिल मिला ,भीतर फाँके तीन ॥

२. रहीमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय ।

टूटे से फिर ना जुरै,जुरै गाँठ परि जाय ॥

